International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का मानवतावाद : आलोचनात्मक सन्दर्भ में

राम गोपाल चतुर्वेदी

प्रवक्ता

बाला प्रसाद कुशवाहा इण्टर कालेज,
बलरामपुर, बरेठी, प्रयागराज, उ. प्र.

आचार्य द्विवेदी शुक्लोत्तर आलोचना के प्रमुख आधारस्तंभ आलोचक हैं। बहुआयामी व्यक्तित्व सृजनात्मकता में सांस्कृतिक मनीषा बोध ,परम्परा और आधुनिकता के विकास प्रक्रिया में भारतीय सभ्यता और संस्कृति की स्थापना को द्विवेदीजी मंगल विधायिनी कर्म के रूप में स्थापित करते हैं। आचार्य द्विवेदी में जातीयता बोध, सांस्कृतिक विरासत की सजग प्रतिभा विद्यमान है। संस्कृत भाषा के अतिरिक्त प्राकृत, अपभ्रंश ,हिंदी की अन्य आधुनिक भाषाओं के साथ ही साथ भारतीय शास्त्रों परआपको विशेषाधिकार प्राप्त था। आपमें इतिहास, अनुसन्धान और संस्कृति का योग है। एक आलोचक के रूप में सैधांतिक और व्यावहारिक दोनों ही आलोचना के रूप में आप सिद्धहस्त हैं। आपकी प्रमुख आलोचनात्मक रचनाएं इस प्रकार हैं –

सूर साहित्य(1936), हिंदी साहित्य की भूमिका (1940), कबीर (1942), हिंदी साहित्य का आदिकाल (1952), सहज साधना (1963), कालिदास की लालित्य योजना (1965), मध्यकालीन बोध का स्वरूप (1970)एवं अन्य निबंधों में आपके आलोचनादर्श दिखाई देते हैं।

आचार्य द्विवेदी के समूचे साहित्य चिंतन के मूल में मनुष्य है। साहित्य जो सीधे जीवन से उत्पन्न होता है इसका अर्थ यह है कि साहित्य जीवन में उपस्थित रहता है उसके लिखे या पढ़े जाने का कारण भी जीवन में खोजना चाहिए।[1] अब तक काव्य,साहित्य,नृत्य आदि ललित एवं धर्मात्मात्मक कलाएं अपने आपमें अधेतव्य थीं। अन्यान्य ज्ञान विज्ञान के साधन से हम इन्हें समझने का प्रयास करते थें किन्तु अब समझा जाने लगा कि ये अधेतव्य विषय नहीं ,साक्ष्य भी नहीं अपितु ये साधन है..... वह साध्य वस्तु क्या है जिसकी साधना के लिए काव्य, नाटक, चित्र, मूर्ति आदि कलाएं साधन हैं, यह जीवन है।जीवन समझने के लिए ही यह सारा टंटा है।[2] साहित्य में उन सारी बातों का जीवंत विवरण होता है जिसे मनुष्य ने देखा है, अनुभव किया है, सोचा है और समझा है। जीवन के जो पहलू हमें नजदीक से और स्थायी रूप से प्रभावित करते हैं उनके विषय में मनुष्य के अनुभवों को समझने के लिए एकमात्र साधन साहित्य है।'[3] इस प्रकार जीवन और जगत के यथार्थ भूमि से सम्बद्ध साहित्य प्रभावशाली और लोकहित की समाचीन व्याख्या करता है।

आचार्य द्विवेदी के सर्जनात्मक व्यक्तित्व में भारतीय जातीय परम्परा या सांस्कृतिक विरासत का बोध , नवीन मानवतावादी और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण का समन्वय है। समन्वयता और सत्यान्वेषकता के तेज से

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आलोचना के मूल मर्म में मनुष्य और मनुष्य कल्याण को सर्वोपरि स्वीकार करते हैं। यही कारण है कि वे चाहे ' साहित्य के मर्म ' पर विचार कर रहें हो , चाहे मानव धर्म पर , चाहे भारत की सांस्कृतिक समस्या' के विषय में सोच रहे हों ,चाहे मौलिकता के प्रश्न पर, चाहे सहज भाषा की व्याख्या पर रहे हों, चाहे साहित्य के इतिहास पर, चाहे विकासवाद समझा रहे हों ,चाहे मार्क्सवाद घूम कर मानवमुक्ति की समस्या पर ही आ जाते हैं । मनुष्यता, मनुष्यता की श्रेष्ठता, मनुष्य की एकता और अंततः मनुष्य की मुक्ति पर उनका अखंड विश्वास है।[4] आलोचना कर्म में आचार्य द्विवेदी एकांगी, अधकचरा और अविचारित रमणीय विचारों से मुक्त संतुलित और सत्यान्वेषी दृष्टि से साहित्य का तथ्यपरक विवेचन किया। शुक्लोत्तर आलोचकों में आचार्य द्विवेदी न तो शुक्ल की मान्यताओं से न तो आतंकित थे और न ही त्रस्त।

साहित्य और इतिहास में विभिन्न मतों, सिधान्तों, मान्यताओं में आचार्य शुक्ल से असहमति व्यक्त करते हैं। भक्ति आन्दोलन में भारतीय चिंतन धारा का सहज विकास दिखाई देता है न कि इस्लाम से परास्त एक हतदर्प प्रतिक्रिया। द्विवेदी जी कहते हैं– "ऐसा करके मैं इस्लाम के महत्व को न भूल रहा लेकिन जोर देकर कहना चाहता हूँ कि अगर इस्लाम न भी आया होता तो इस साहित्य का बारह आना वैसा ही होता जैसा आज है।"[5] आदिकाल के नामकरण , भक्ति का उद्भव और विकास ,संतमत , भक्तों की परम्परा ,योगमार्ग ,नाथों और सिद्धों की भूमिका, मध्यकालीन रीतिकाव्य इत्यादि की सीमाओं और मान्यताओं की लोकचिंता के आलोक में सर्वांगीण और सहज विकासमार्ग परम्परा से अध्ययन कर समाचीन समन्वय से उनके महत्व को रेखांकित किया ।

आचार्य द्विवेदी में शास्त्र की अपेक्षा लोकमुखी तत्वों को मुखर महत्व दिया। इतिहास हो या निबंध, आलोचना हो या कविता, उपन्यास हो या कहानी सभी में उनकी परिष्कृत मानवीय सांस्कृतिक दृष्टि का परिचय मिलता है। आपके साहित्य स्थापना में समाज का वह वर्ग है जिसे अनपढ़, अशिक्षित और तिरष्कृ त कर बहिष्कृत रखा गया था। हिंदी समाज की सांस्कृतिक प्रतिष्ठा के आदर्श कवि के रूप में प्रस्तुत करते हैं कबीर को। तत्वचिंतन एवं दर्शन के व्यापक सिधान्तों को पकड़कर लोक चिंता के आलोक में कबीर को वाणी का डिक्टेटर कह कर उसकी महत्ता सिद्ध करते हैं। हिंदी के कबीर, सूर, तुलसी, जायसी, निराला, महादेवी, प्रेमचन्द, अज्ञेय सभी अपने अपने ढंग से इन्हें प्रभावित करते हैं, क्योंकि अपने अपने ढंग से ये सारे सर्जक मानव की अंतर्निहित एकता के सत्य को उद्भाषित करते हैं और सभी मानवीय छवि और कला छवि के शिल्पी हैं।[6] बाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचंद्र लेख, पुनर्नवा,अनामदास का पोथा में लगभग एक सा जीवन दर्शन और मानवता का विकास मुखरित होता है।आलोचन इन्द्रनाथ मदान के शब्दों में –**"आचार्य द्विवेदी ने इतिहास का दोहन किया है, कालिदास साहित्य में रसपान किया है ,आदिकालीन तथा मध्यकालीन हिंदी काव्य का अनुशीलन किया किया है और डॉ द्विवेदी ने पाश्चत्य**

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

साहित्य, ज्ञान विज्ञान तथा भाषा विज्ञान का परिशीलन किया जिसके फलस्वरूप उनका दृष्टिकोण आचार्य शुक्ल की अपेक्षा अधिक व्यापक है। आचार्य शुक्ल की जीवनदृष्टि के मूल में भी समाज मंगल की भावना तथा समाज कल्याण की ही धारणा है, जो उनके काव्य सिद्धांतों को प्रभावित करती है किन्तु आचार्य द्विवेदी की समाज मंगल संबधी जीवन दृष्टि पर रोमांटिक जीवन बोध का गहरा प्रभाव पड़ा है।[7] द्विवेदी जी के सांस्कृतिक व्यक्तित्व की गहरी छाप उनके ललित निबंधों में भावुकता, सृजनशीलता ,कल्पनारमणीयता की सहजता का समन्वय है।

अशोक के फूल, कल्पलता, कुटज आदि इन निबंधों में आचार्य द्विवेदी ने पेड़ पौधों और इनके फूलों के पड़ताल में अकुंठ मानवीय चेतना, भारतीय इतिहास, भारतीय जन संस्कृति के ज्ञात अज्ञात नवीन अध्यायों को अनावृत करते हुए मानवीय जिजीविषा का अन्वेषण करते हैं।अतः द्विवेदी संतुलित दृष्टि से ज्ञान विज्ञान , भौतिकता, आधुनिकता,प्राचीन–नवीन और भारतीय–पाश्चत्य किसी मान्यता का अन्धानुकरण नहीं करते हैं।मानवतावाद की व्यापकता को इस प्रकार उल्लेखित करते हैं।विभिन्न युगों में साहित्यिक साधनाओं के मूल में कोई न कोई व्यापक मानवीय विश्वास होता है आधुनिक युग का यह व्यापक विश्वास ही मानवतावाद है।[8] इतिहास, धर्म, पुरातत्व, नृतत्व, जीव विज्ञान, मनोविज्ञान, राजनीति, समाजशास्त्र इत्यादि सभी शास्त्रों का समुचित प्रयोग अपने साहित्य में किया ।

मनुष्य की संकीर्णताओं पर जमकर प्रहार करते हैं। साहित्य का चरम लक्ष्य– "पशु सामान्य मनोवृत्ति से ऊपर उठकर प्रेम और मंगलमय मनुष्य धर्म में प्रतिष्ठित करना" ही इनका धेय है। आचार्य द्विवेदी ने व्यक्ति के समष्टि भावभूमि, इहलोक, ईश्वर के स्थान पर मनुष्य की प्रतिष्ठा का आग्रह किया। मार्क्सवाद का समर्थन मनुष्य के जीवन में सहायक के रूप में करते हैं।

द्विवेदी जी ने जो कुछ भी लिखा है वह सजीव है ,प्राणवान है, शक्तिशाली प्रेरक और महिमामय है। जब तक इस विशाल विश्व में मनुष्य रहेगा ,यह संघर्ष ही उसकी चेतना को गति देगा। मनुष्य की यही चेतना वाक् और अर्थ के माध्यम से स्फूटित होगी और साहित्य दृष्टि निश्चित रूप से मनुष्य सत्य को प्रतिस्थापित करने में अपनी सार्थकता का अनुभव करती रहेगी।[9] द्विवेदी जी का मूल मर्म इसी सत्य को प्रकाशित करना है।

संदर्भ सूची :–

1. आचार्य द्विवेदी। साहित्य सहचर ,पृष्ठ सं–3
2. आचार्य द्विवेदी। साहित्य सहचर पृष्ठ सं–25

Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

3. आचार्य द्विवेदी। साहित्य सहचरपृष्ठ सं–3
4. हिंदी आलोचना शिखरों का साक्षात्कार पृष्ठ सं–89
5. हिंदी साहित्य की भूमिका , संस्मरण पृष्ठ सं –65
6. आजकल अक्तूबर 2007, रामदरश मिश्र ,पृष्ठ सं–11
7. आ. ह . प्र .द्विवेदी : व्यक्तित्व और कृतित्व , इन्द्रनाथ मदान ,आमुख पृष्ठ सं–3
8. विचार और वितर्क , आ. ह. प्र. द्विवेदी पृष्ठ सं –90
9. हिंदी आलोचना शिखरों का साक्षात्कार, रामचन्द्र तिवारी पृष्ठ सं–97